

डॉ. डेविड टर्नर, गॉस्पेल ऑफ़ जॉन, सत्र 12, यूहन्ना 10:1-42

© 2024 डेविड टर्नर और टेड हिल्डेब्रांट

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 12 है, टेन्स टाइम्स इन जेरूसलम, द गुड शेफर्ड, जॉन 10:1-42।

नमस्कार, इस वीडियो में हम जॉन 10 का अध्ययन कर रहे हैं, अपने अध्ययन के बाद जो हमने यीशु द्वारा अंधे व्यक्ति को ठीक करने के बारे में अभी पूरा किया है, और अध्याय 10 को देख रहे हैं, जिसे आमतौर पर गुड शेफर्ड प्रवचन के रूप में जाना जाता है।

इसलिए, जैसा कि हम आम तौर पर करते रहे हैं, हम बस थोड़ी देर के लिए कथा के प्रवाह का अनुसरण करेंगे और देखेंगे कि कहानी किस तरह से सामने आती है। फिर हम वापस आएं और कहानी के कुछ प्रमुख क्षेत्रों पर दोबारा गौर करेंगे। इसलिए, जैसा कि हम जॉन अध्याय 10 को देखते हैं, हम अभी भी देख रहे हैं कि विद्वानों ने जॉन के सुसमाचार में पर्व चक्र को क्या कहा है।

यह संभवतः इससे जुड़ा आखिरी अध्याय होगा। और हम अभी भी झोपड़ियों के पर्व, झोपड़ियों के पर्व, सुक्कोट के पहले के आख्यान से बहना शुरू करते हैं। और अध्याय का पहला भाग, मुझे लगता है कि हम श्लोक 1 से 21 तक कहेंगे, यह सिर्फ यीशु और यहूदी नेताओं के बीच चल रहा एक विवाद है, और वह मूल रूप से अभी भी उन्हें सिखा रहे हैं।

तो, हमारे पास यीशु के ये वैकल्पिक पैटर्न हैं जो किसी प्रकार का रूपक प्रवचन दे रहे हैं, जैसा कि हम अंततः इस व्याख्यान में देखेंगे, वह वास्तव में क्या कर रहा था, क्या एक दृष्टान्त, क्या भाषण का एक अलंकार, क्या एक रूपक। हम उस प्रश्न पर बहस कर सकते हैं, और हम आने वाले क्षणों में कुछ करेंगे। लेकिन वह अपने बारे में आलंकारिक रूप से बात कर रहा है, स्वयं का वर्णन करने के लिए रूपकों का उपयोग कर रहा है।

और वह सबसे पहले श्लोक 1 से 5 में चोर, चरवाहे, भेड़ और अजनबी के बारे में बोलता है। फिर उसके श्रोतागण, श्लोक 6, इसके बारे में थोड़ी सी संपादकीय टिप्पणी, उन्हें समझ नहीं आई। वे जो सिखा रहे थे उसका उन्होंने पालन नहीं किया। फिर उसने और भी अधिक विस्तारित तरीके से, वफादार चरवाहे के बारे में बात की, और वफादार चरवाहे की तुलना मजदूर से की।

इस सारी सामग्री में, निश्चित रूप से यह समग्र समझ है कि यीशु खुद को एक अच्छा चरवाहा बता रहे हैं, और चोर, डाकू और भाड़े के आदमी के लिए सभी अपमानजनक शब्द उन्हें और इसराइल के लिए उनकी सच्ची चिंता को धार्मिक लोगों की चिंता से अलग करते हैं। जिन नेताओं से उनकी बहस होती रही है। वह उन्हें रूपक में नकारात्मक विशेषताओं के रूप में प्रस्तुत कर रहा है। तो, इसके दूसरे खंड का निष्कर्ष, जहां वह खुद को धार्मिक नेताओं के प्रति वफादार चरवाहे के रूप में तुलना करता है, जो कि किराए के हाथ के रूप में है, छंद 19 और 20 में उस

सब का परिणाम, एक बार फिर है, जैसा कि हमने तब से देखा है अध्याय 7 में यीशु यरूशलेम पहुंचे हैं, श्रोताओं के बीच एक विभाजन।

इसलिए, 1019 के अनुसार, जिन यहूदियों ने ये शब्द सुने, वे फिर से विभाजित हो गए। उनमें से कई लोगों ने कहा कि उसमें दुष्टात्मा है और वह पागल हो गया है। उसकी बात क्यों सुनें? तो, उनमें से कुछ यीशु से बिल्कुल भी असहमत नहीं थे।

उन्हें लगा कि वह बकवास कर रहा है। वे इसमें घुस ही नहीं पाए. तो, उन्होंने कहा कि मूलतः वह पागल है।

अन्य, श्लोक 21 में कहा गया है, ये किसी दुष्टात्मा से ग्रसित व्यक्ति की बातें नहीं हैं। क्या कोई राक्षस अंधों की आंखें खोल सकता है? तो यहां हमारे पास अध्याय 10 में अध्याय 9 का एक लिंक है। और अगर हमें पहले से ही इसका एहसास नहीं हुआ था, तो हम देखते हैं कि जैसे ही अध्याय 1 शुरू होता है, अध्याय 10 श्लोक 1 में शुरू होता है, इस आशय का कोई वास्तविक संक्रमणकालीन बयान नहीं है कि अगले दिन या अगले सप्ताह या बाद में या कुछ और, हम अध्याय 9 से सीधे अध्याय 10 में चलते हैं। और इसलिए, हमारे पास यीशु मूल रूप से 10.1 में उन्हीं फरीसियों से कह रहे हैं जो उन्होंने अभी 9.41 में उनके अंधेपन के बारे में कहा था।

तो, अध्याय एक नकारात्मक नोट पर शुरू होता है, बस अध्याय 9 से आगे बढ़ता है। और यदि आप इसे पहले से नहीं समझ पाए हैं, तो अध्याय 10, श्लोक 21 में यीशु के कुछ श्रोताओं की टिप्पणी, क्या एक दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति खुल सकता है अंधों की आंखें? वे कह रहे थे, बिल्कुल नहीं, यह एक अलंकारिक प्रश्न है, लेकिन उन्हें इसके नकारात्मक उत्तर की उम्मीद थी। तो, यह अध्याय का पहला भाग है क्योंकि यह वास्तव में वह सब कुछ समाप्त करता है जो हम अध्याय 7 से कालानुक्रमिक रूप से पढ़ रहे हैं कि आबूस के पर्व के दौरान यीशु ने यरूशलेम का दौरा किया था। इस बिंदु पर हमारे पास एक कालानुक्रमिक बदलाव है क्योंकि हमें अध्याय 10 और श्लोक 22 में बताया गया है, फिर यरूशलेम में समर्पण का त्योहार आया।

समर्पण का त्योहार हनुक्का है, जो मंदिर का समर्पण है। हम इसे, मेरा अनुमान है, 160 ईसा पूर्व में अंतरविधान काल के दौरान मंदिर का पुनर्समर्पण कह सकते हैं, सेल्यूसिड राजा एंटीओकस एपिफेन्स ने यहूदियों को मूल रूप से बुतपरस्त विचारों में जबरन परिवर्तित करने का प्रयास किया था। कुछ यहूदी साथ चले गए थे, लेकिन हस्मोनियन, जिन्हें अक्सर मैकाबीज़ कहा जाता था, ने विद्रोह कर दिया और इसलिए अंततः सेल्यूसिड राजवंश के विरोध में अपना राज्य स्थापित करने में सक्षम हुए।

तो, एंटीओकस एपिफेन्स द्वारा यहूदियों के उत्पीड़न का एक हिस्सा मंदिर का अपमान था और अंततः उसने मैकाबीज़ के अनुसार वेदी पर एक सुअर की बलि भी दी थी। जोसेफ़स भी इन मामलों के बारे में बात करता है। इसलिए, जब यहूदी लोग अपने मंदिर को पुनः प्राप्त करने में सक्षम हो गए, तो उन्होंने मंदिर को फिर से समर्पित कर दिया और अधिक शुद्ध तेल प्राप्त करने से पहले पूरे समय देखभाल के लिए तेल के एक फ्लास्क के चमत्कारी संरक्षण के बारे में एक किंवदंती है।

तो, वह चमत्कार, रोशनी का पर्व, और हनुक्का, सभी उस समय की अवधि से आते हैं। हनुक्का, जैसा कि हम शायद आधुनिक समय में जानते हैं, एक छुट्टी है जो आमतौर पर साल के अंत में दिसंबर के आसपास आती है। सुक्कोट एक पतझड़ की छुट्टी है, इसलिए जॉन 10 के पहले भाग के समय और 10.22 में होने वाले संक्रमण के बीच कम से कम, मोटे तौर पर कहें तो, शायद अधिक कहने के लिए कुछ महीने हैं। वास्तव में, पाठ हमें श्लोक 22 के अंतिम शब्दों में बताता है, यह सर्दी थी।

तो, अध्याय के इस दूसरे भाग में, मैं कह रहा हूँ कि हमारे बीच तीन तीखी बहसें हुई हैं। उनमें से एक छोटा है, लेकिन इसमें दर्शकों के गुस्से की कमी नहीं है। तो, हमें 10.23 में बताया गया है, यीशु मंदिर के प्रांगण में सुलैमान के स्तंभ में घूम रहा था।

यह संभवतः अन्यजातियों के दरबार की परिधि के साथ रहा होगा, एक बरामदा, एक स्तंभ, एक ऐसा क्षेत्र जहां यह खंभों से ढका हुआ पैदल मार्ग था। जैसा कि आप अधिनियमों की पुस्तक से याद कर सकते हैं, यह प्रारंभिक ईसाइयों का एक मिलन स्थल भी है, जिसे अक्सर सोलोमन का पोर्च कहा जाता है। और आप इस शब्द से परिचित होंगे, सोलोमन का बरामदा।

मैं इन दिनों बहुत से चर्चों को देखता हूँ जो खुद को सोलोमन पोर्च चर्च कहते हैं, खुद को चर्चा और बहस के लिए खुले होने और विभिन्न विचारों पर चर्चा करने के लिए स्वागत करने वाले चर्च के रूप में चित्रित करने की कोशिश करते हैं। सो जब यीशु सुलैमान के ओसारे में से चला या, तो जो यहूदी वहां थे, वे उसके पास इकट्ठे होकर कहने लगे, तू हमें कब तक भ्रम में रखेगा? यदि आप मसीहा हैं, तो हमें स्पष्ट रूप से बताएं। इसलिए, वे मूल रूप से उसे चुनौती दे रहे हैं, जॉन 6 के लोगों के विपरीत नहीं, जब उन्होंने कहा था, यदि आप वास्तव में मसीहा हैं, तो बस हमें एक संकेत दिखाएं।

और यीशु ने उन्हें यहाँ श्लोक 25 में उत्तर दिया है जैसे उन्होंने अध्याय 6 में अपने श्रोताओं को दिया था। मुझे लगता है कि अध्याय 8 में भी ऐसी ही बात होती है, यह कहते हुए, मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ, मैंने तुम्हें बताया था, लेकिन तुमने विश्वास नहीं किया। जो काम मैं अपने पिता के नाम पर करता हूँ वे मेरे बारे में गवाही देते हैं। तो यह हमें यरूशलेम में यहूदी नेताओं के साथ यीशु की पहली बातचीत के पांच अध्यायों में वापस ले जाता है, जहां वह अपने बारे में गवाही के बारे में बात करता है।

जो काम मैं अपने पिता के नाम पर करता हूँ वे मेरे बारे में गवाही देते हैं, परन्तु तुम विश्वास नहीं करते, क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो, हमें इस प्रवचन के पहले भाग में ले चलते हैं। तो हमें फिर से यहाँ हनुक्का में वह बात याद आ गई जो यीशु ने हाल ही में कुछ महीने पहले बूथों के पर्व पर सिखाई थी। यह गुड शेफर्ड प्रवचन का एक संकेत है।

तो, यीशु पद 26 में उस विषय को उठाते हैं, और 27 में जारी रखते हैं, मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मुझे उनके बारे में जानकारी है, और वे मेरा पीछा कर रहे हैं। मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ।

वे कभी नष्ट नहीं होंगे. कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा। मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझे दिया है, सब से बड़ा है।

कोई उन्हें मेरे पिता के हाथ से छीन नहीं सकता। मैं और बाप एक हैं। तो, यहाँ यीशु के पहले विवाद का आधा हिस्सा है, और अब वे उसे पत्थर मारने के लिए पत्थर उठाकर इसका जवाब देते हैं।

हमने स्पष्ट रूप से इसे जॉन के सुसमाचार में पहले ही घटित होते देखा है, और फिर यीशु उनसे कहते हैं, इसमें क्या बात है? तुम मुझे पत्थर क्यों मारना चाहते हो? मैं ने तुम्हें पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं। आपने मुझसे यह दिखाने के लिए कहा है कि क्या मैं मसीहा हूँ। मैं तुम्हें बता चुका हूँ कि मैं क्यों हूँ।

अब तुम मुझे पत्थर क्यों मार रहे हो? उन्होंने आयत 33 में उत्तर दिया, किसी अच्छे काम के लिए तुम्हें पथराव नहीं किया जा रहा है, बल्कि इसलिए किया जा रहा है क्योंकि तुम्हारे पास ईश्वर होने का दावा करने वाला एक साधारण आदमी है। तो चाहे इसे तकनीकी रूप से हमें ईशनिंदा कहना चाहिए या नहीं, यह निश्चित रूप से उनके विचार में एक प्रकार की बदनामी है कि यीशु दिव्य होने का दावा कर रहे हैं, भगवान होने का दावा कर रहे हैं, और इसलिए यह उनके लिए एक बहुत ही नकारात्मक बात है। तो, अध्याय में अंतिम विवाद लगभग यहाँ श्लोक 34 में शुरू होता है।

यीशु, उनके उत्तर में, भजन 82 का हवाला देते हुए पवित्रशास्त्र से अपना बचाव करते हैं, जो अपने आप में समझने के लिए एक चुनौतीपूर्ण भजन है, और यीशु का इसका उद्धरण इसकी व्याख्या करने का एक बहुत ही दिलचस्प तरीका सामने लाता है जिसके बारे में हम बाद में बात करेंगे वीडियो, लेकिन यहां बात सिर्फ इतनी है कि वह बाइबल से अपना बचाव कर रहा है, और वह यहां तक कहता है, क्या यह आपके कानून में नहीं लिखा है? तो इसके बारे में मुझे परेशान मत करो। यह कुछ ऐसा है जिस पर आप दावा करते हैं कि आप विश्वास करते हैं। इसलिए, हम यहां उसी प्रकार की चीज़ से निपट रहे हैं जो हमने अध्याय 5 में देखी थी जब यीशु उनसे यह कहकर उनके अधिकार को नष्ट कर रहे थे, आपको लगता है कि आपको मूसा मिल गया है, लेकिन आप ऐसा नहीं कर रहे हैं। क्योंकि मूसा ने मुझे पा लिया, इसलिए तुम वास्तव में मूसा को नहीं पा सकते।

तो, वह यहां अध्याय 10, श्लोक 34 में जो कह रहा है, यदि आपने वास्तव में कानून को समझा होता, तो आप मुझे समझते क्योंकि मैं जो चीज़ें कर रहा हूँ वे शास्त्रों द्वारा समर्थित हैं और आप जो कर रहे हैं वह नहीं है। यहां श्लोक 34 में एक दिलचस्प बात यह है कि वह कहता है, क्या यह आपके कानून में नहीं लिखा है, लेकिन वह भजन उद्धृत कर रहा है। तो स्पष्ट रूप से हिब्रू बाइबिल को टोरा, नेवि'इम और केटुविम में विभाजित किया गया है, लेकिन एक अर्थ में, सभी तनख, टोरा, नेवि'इम, केटुविम, पूरे टेस्टामेंट को कानूनी अधिकार के रूप में देखा जाता है, और तो शायद इसीलिए वह यहां भजनों को कानून के रूप में संदर्भित करता है।

इसलिए, यीशु अनिवार्य रूप से छोटे से बड़े तर्क में पड़ जाते हैं। हम इस पर और अधिक विस्तार से विचार करेंगे, और वह कह रहे हैं कि आपके पास भजन 82 में यह श्लोक है जो स्पष्ट रूप से

मनुष्यों या शायद स्वर्गदूतों को देवताओं के रूप में संदर्भित करता है, तो अगर मैंने कहा कि मैं भगवान का पुत्र हूँ तो आप मुझ पर नाराज क्यों हैं? आपको उस धर्मग्रंथ से कोई दिक्कत नहीं है तो मुझसे क्यों दिक्कत है? छोटे से बड़े की ओर तर्क. तो, इसके जवाब में, आयत 39 में, उन्होंने उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह उनकी पकड़ से बच गया।

मुझे लगता है कि हमने पिछले अध्यायों को इसी तरह समाप्त होते देखा है, उदाहरण के लिए, अध्याय 8। तो, यह बस बढ़ रहा है और यहूदी नेता यीशु को गिरफ्तार करने का प्रयास कर रहे हैं, और वह या तो अलौकिक शक्ति से या बस चतुराई से उनसे बचने में सक्षम है। 'उसे करने की कोशिश कर रहे हैं. इसलिए, जब हम अध्याय 10 से अध्याय 9 के जुड़ाव को देखते हैं, और यहां प्रासंगिक प्रवाह का पालन करने का प्रयास करते हैं, तो हम वास्तव में नहीं समझते हैं कि हमें यहां एक नया अध्याय क्यों रखना है। कभी-कभी बाइबल में अध्याय विभाजन अच्छी तरह से रखे गए हैं और एक प्रस्थान, एक नया विषय दिखाते हैं, अन्य बार वे रास्ते में आ जाते हैं।

मुझे लगता है कि यह उत्तरार्द्ध में से एक है, दुर्भाग्य से, यह रास्ते में आ जाता है। क्योंकि अध्याय 10 में हमारे पास अध्याय 9 में फरीसियों के साथ यीशु की बातचीत में जो चल रहा है उसकी एक निरंतरता है, इसलिए हमें संभवतः अध्याय 10, श्लोक 1, यदि आप चाहें, अध्याय 9, श्लोक 42 के रूप में पढ़ना चाहिए, लेकिन वहाँ हैं अध्याय 9 में 42 छंद हैं, केवल 41 हैं। जब हम इस प्रवचन को इस बात को ध्यान में रखते हुए और इस संदर्भ में पढ़ते हैं, तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि यह एक अच्छी छवि के साथ इतनी गर्म और फजी चीज़ नहीं है, शायद, एक की छोटा मेमना और उसे गले लगाते हुए एक छोटा बच्चा या ऐसा ही कुछ।

यह सब ठीक है और अच्छा है, और हम निश्चित रूप से उसकी भेड़ों के रूप में हमारे लिए ईश्वर की देहाती चिंता की सराहना करते हैं। हम इस बात से अवगत हैं कि कैसे यह विषय भजन 23 और कई अन्य ग्रंथों में बाइबल में व्याप्त है। दुर्भाग्य से, जॉन के कथा प्रवाह में, यह एक गर्म और अस्पष्ट पाठ नहीं है, यह एक गर्म और दांतेदार पाठ है, या शायद मुझे कहना चाहिए कि यह एक ठंडा और दांतेदार पाठ है।

क्योंकि दुर्भाग्यवश, यीशु यहाँ फरीसियों को गले नहीं लगा रहे हैं। वह उन्हें किनारे कर रहा है क्योंकि वे स्वीकार नहीं कर रहे हैं कि वह कौन है। इसलिए, गुड शेफर्ड प्रवचन यहां भगवान की अद्भुत निष्ठा और उनकी भेड़ों के लिए उनकी कोमल देखभाल की प्रशंसा करने के लिए नहीं है, बल्कि यह धार्मिक नेताओं पर उस तरह के चरवाहे नहीं होने का आरोप लगाने के लिए है जैसा कि उन्हें भगवान के लोगों के लिए होना चाहिए। .

इसलिए, यह ईश्वर के लोगों को सांत्वना देने के लिए एक देहाती उपदेश या एक देहाती पाठ की तुलना में इज़राइल के धार्मिक नेताओं की एक भविष्यसूचक आलोचना है। इसका मतलब यह नहीं है कि जब हम इस पाठ को इसके संदर्भ में देखते हैं, तो हमें इसमें बहुत अधिक आराम नहीं मिलता है। हम निश्चित रूप से कर सकते हैं, लेकिन हमें इसे यीशु के शब्दों, शिक्षाओं और कार्यों के खिलाफ धार्मिक नेताओं के दुखद विद्रोह के साथ संतुलित करना होगा।

ध्यान दें कि यह कई मायनों में एक बहुत ही दुखद पाठ है, उस खुशी के बावजूद जो हमें तब मिलती है जब हम इसे भगवान के लोगों के रूप में खुद पर लागू करते हैं। तो यह पाठ कई मायनों में एक नकारात्मक पाठ है। पाठ के बारे में एक और बात जिस पर हमें यहां विचार करने की आवश्यकता है वह यह है कि यह अध्याय 9 पर कैसे लागू हो सकता है। यदि हम अध्याय 9 में उस अंधे व्यक्ति के बारे में सोचते हैं जिसे यीशु ने ठीक किया और फिर खुद के बारे में पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया, तो अध्याय में यह व्यक्ति 9 जिसके साथ धार्मिक अगुवों ने इतना बुरा व्यवहार किया और आराधनालय से बाहर निकाल दिया, हम उसे उन भेड़ों में से एक के रूप में समझने के अलावा कुछ नहीं कर सकते जिनके बारे में अध्याय 10 बोल रहा है, जिनके साथ झूठे चरवाहों ने अच्छा व्यवहार नहीं किया है। चोरों और लुटेरों द्वारा भाड़े के हाथ।

तो, हमने यहां कहा कि वह अंधा आदमी जो अब देखता है वह एक भेड़ का उदाहरण है जिसे चोरों के आने पर किराए के हाथ से छोड़ दिया गया था, और अब यीशु उसे पकड़कर अपने झुंड में ले जाएगा, और कोई भी ऐसा करने में सक्षम नहीं है उसे यीशु और उसके पिता के हाथों से छीनने के लिए।

जॉन 10 के प्रासंगिक जुड़ाव के बारे में सोचने के बाद अगली बात जो हम सोचना चाहते हैं वह यह है कि यीशु इस पूरे प्रवचन के साथ क्या कर रहे हैं जिसे हम गुड शेफर्ड कहावत कहते हैं? यह किस प्रकार का साहित्यिक उपकरण है? यह सामग्री किस शैली की है? इसलिए, नए नियम के अध्ययनों में हमारे बीच इस बात पर बहुत बहस चल रही है कि क्या जॉन के सुसमाचार में दृष्टांत हैं या नहीं। कई लोग आत्मविश्वास से कहते हैं कि सिनॉटिक परंपरा और जोहानाइन परंपरा के बीच एक अंतर यह है कि जॉन में दृष्टांत नहीं हैं, जबकि सिनॉटिक गॉस्पेल मैथ्यू, मार्क और ल्यूक दृष्टांतों से भरे हुए हैं।

तो, यहाँ जॉन 10 में क्या चल रहा है? जब हम जॉन 15 की इन पंक्तियों के साथ सोच रहे हैं तो हम इसे साथ ला सकते हैं, जो कि यीशु के पास वास्तविक बेल का रूपक है। तो, क्या यह एक दृष्टांत है या नहीं? हम इसे संक्षिप्त दृष्टान्तों के प्रकाश में कैसे समझते हैं? ठीक है, इसके पहले भाग को देखकर, ऐसा लगता है कि हमारे पास जो है वह 10 होगा, 1 से 5, दृष्टांत होगा, भाषण का अलंकार होगा, जो भी शब्द आप इसके लिए उपयोग करना चाहते हैं। फिर यीशु के पास कुछ है, संपादक के पास मूल रूप से श्लोक 6 में इसके बारे में एक छोटी सी टिप्पणी है, और फिर हम यीशु से आपको इस बारे में कुछ व्याख्या देते हैं कि वह अभी श्लोक 7 में क्या कह रहे हैं और उसके बाद क्या कह रहे हैं।

इसलिए, जब हमारे पास दृष्टांत होते हैं, तो जब हम सिनॉटिक गॉस्पेल में ऐसा कुछ पाते हैं, तो अक्सर उन्हें यीशु के कुछ कहने के साथ पेश किया जाता है, जैसे स्वर्ग का राज्य भी नन की तरह होगा, या स्वर्ग का राज्य जैसा है। अक्सर एक दृष्टांत देने के बाद, यीशु इस प्रभाव से कुछ कहेंगे, जैसे यह, वैसे भी। इसलिए, वह एक तुलना कर रहा है, दृष्टान्त के तत्वों और जिन तत्वों से वे बात करते हैं, उनके बीच एक विस्तारित सादृश्य है।

आप पुरानी कहावत से परिचित हो सकते हैं कि दृष्टांत एक स्वर्गीय अर्थ वाली एक सांसारिक कहानी है। मुझे लगता है कि इसमें काफी सच्चाई है और काफी मदद मिल सकती है। हमारे यहाँ जॉन 10 में उस प्रकार की भाषा नहीं है।

यीशु कहते हैं कि स्वर्ग के राज्य की किसी भी चीज़ से तुलना नहीं की जा सकती, लेकिन यह ऐसा है जैसे कि उनके पास था क्योंकि यहाँ कुछ ऐसा हो सकता है जिसका प्रभाव यीशु ने कहा हो, मेरा आपसे रिश्ता और इज़राइल से मेरा रिश्ता एक चरवाहे के रिश्ते जैसा है भेड़। और उसने कुछ ऐसा कहा होगा जैसे इस्राएल का फरीसी नेतृत्व और मुख्य याजक मज़दूरों के समान हैं, चोरों के समान हैं। और हो सकता है कि उसने इसे इस तरह से रखा हो।

इसलिए भले ही हमारे पास वही बाहरी आकर्षण नहीं है जो हम सिनोप्टिक गॉस्पेल में पाते हैं, जो हमें बताया गया है कि वहाँ दृष्टांत हैं, हमारे पास इस तरह की भाषा का उपयोग करके एक विस्तारित तुलना की जा रही है क्योंकि हम मनुष्य के रूप में इसी तरह सोचते हैं। हम जो सोच रहे हैं उसे अमूर्त चीज़ों से स्पष्ट करने के लिए हम ठोस चीज़ों के संदर्भ में सोचते हैं। हम सीमित प्राणी के रूप में इस प्रकार के लोग हैं।

हम ऐसा करने से खुद को नहीं रोक सकते, इसलिए मानव संचार के बारे में हम इसका स्वागत करते हैं। तो, जॉन के सुसमाचार में अध्याय 10, श्लोक 6 में भाषण के इस अलंकार का वर्णन करने के लिए जिस शब्द का उपयोग किया गया है वह पैरोइमिया शब्द है। पैरोइमिया शब्द, निश्चित रूप से, सिनोप्टिक गॉस्पेल दृष्टान्त में प्रयुक्त शब्द से भिन्न शब्द है, जो ग्रीक में दृष्टांत है।

पुराने नियम का शब्द जो कभी-कभी इस प्रकार के प्रवचन के लिए उपयोग किया जाता है वह मशाल है। और इसलिए, यह पता लगाने की कोशिश करना एक मजेदार बात है कि पुराने टेस्टामेंट में मशाल शब्द का उपयोग कैसे किया जाता है, नए टेस्टामेंट में दृष्टांत का उपयोग कैसे किया जाता है, और यहां जॉन में पैरोइमिया का उपयोग कैसे किया जाता है। तो, इस शब्द का प्रयोग पहली बार यहां जॉन में कुछ बार किया गया है और फिर अध्याय 16, श्लोक 25 और 29 में किया गया है।

और 2 पीटर, मुझे लगता है, उसी को संदर्भित करता है, अध्याय 2, श्लोक 22 में भी उसी शब्द का उपयोग करता है, मुझे लगता है कि यह सूअरों के कीचड़ में लौटने और कुत्तों के अपनी उल्टी में लौटने के बारे में एक घृणित बात के संदर्भ में है। उस अप्रिय संकेत के लिए खेद है, लेकिन 2 पतरस, अध्याय 2 में इसका उल्लेख किया गया है। इसलिए पैरोइमिया एक प्रकार की आलंकारिक कहावत है, कुछ रखने का कुछ यादगार तरीका, कुछ सारगर्भित, कुछ ऐसा जिसमें किसी प्रकार की सादृश्यता शामिल होती है, एक तुलना, एक कहावत, किसी चीज़ का वर्णन करने का कोई आकर्षक तरीका, निःसंदेह दृष्टांत शब्द से भिन्न शब्द, लेकिन मुझे लगता है कि वह अनिवार्य रूप से एक ही काम करता है। तो, यह एक अप्रासंगिक प्रश्न है कि यह एक दृष्टांत है या नहीं।

हम इसके लिए किस शब्द का उपयोग करते हैं, यह वास्तव में मायने नहीं रखता। हमें यहां यह देखने की जरूरत है कि कैसे यीशु अपनी स्थिति, धार्मिक नेताओं और इसराइल के लोगों के साथ

एक विस्तारित तुलना का उपयोग कर रहे हैं, और कैसे ये सभी शब्द जो वह उपयोग कर रहे हैं, वास्तविक जीवन और जो चल रहा है, उसके साथ समानताएं हैं। वहीं और ठीक तब. इसलिए, जब यीशु ने इस तरह से बोलना शुरू किया, तो वह स्पष्ट रूप से ऐसी भाषा का उपयोग नहीं कर रहा था जो धार्मिक नेताओं के लिए उसके श्रोता थे, और लोगों ने पहले नहीं सुनी थी।

वह ऐसे शब्दों में बोल रहा है जो पुराने नियम में इज़राइल के साथ भगवान के रिश्ते और बाकी देश के साथ धार्मिक नेताओं के रिश्ते का वर्णन करने के लिए काफी आम हैं। हम भजन 23 से अच्छी तरह परिचित हैं, यहोवा मेरा चरवाहा है, परन्तु यहोवा अपने लोगों की चरवाही उन अगुवों के द्वारा करता है जिन्हें वह इस्राएल पर नियुक्त करता है। हम यिर्मयाह अध्याय 23 जैसे भविष्यसूचक पाठ में विभिन्न प्रकार के धार्मिक नेताओं की समस्याओं और लोगों के साथ उनके व्यवहार के तरीके के बारे में पढ़ते हैं।

तो, यिर्मयाह 23 आयत 1 में कहता है, हाय उन चरवाहों पर जो मेरी चरागाह की भेड़-बकरियों को नष्ट और तितर-बितर कर रहे हैं। इस्राएल का परमेश्वर यहोवा उन चरवाहों से यों कहता है, कि तुम ने मेरी भेड़-बकरियों को तितर-बितर करके भगा दिया है, और उनकी कुछ सुधि न ली, इस कारण जो बुराई तुम ने की है उसका दण्ड मैं तुम को दूंगा। मैं अपनी भेड़-बकरियों के बचे हुए लोगों को उन सब देशों से इकट्ठा करूंगा जहां मैं ने उन्हें खदेड़ दिया है, और मैं उन्हें उन्हीं की चराइयों में वापस ले आऊंगा जहां वे फूलें-फलेंगे और गिनती में बढ़ेंगे।

मैं उन पर चरवाहे रखूंगा जो उन्हें चराएंगे, और वे फिर न डरेंगे, न घबराएंगे, और न कोई खो जाएगा। तो, यिर्मयाह 23, अन्य पाठ जिनके बारे में हम बात कर सकते हैं, ईजेकील 34 में भी इसी तरह की बात है, एक पाठ जो लोगों के लिए चिंता की कमी, उनके भ्रष्टाचार, उनके अस्तित्व के लिए इज़राइल के वर्तमान नेतृत्व को परेशान कर रहा है। चरवाहों के प्रकार जो अनिवार्य रूप से चरवाहे तरीके से झुंड की देखभाल करने के बजाय अपने स्वयं के लाभ के लिए झुंड का उपयोग कर रहे हैं। इसलिए, नए नियम में, जब हमारे पास मैथ्यू 9, श्लोक 36 जैसे पाठ हैं, जहां यीशु लोगों पर नज़र रखते हैं और उनके लिए दया करते हैं क्योंकि वे बिना चरवाहे की भेड़ की तरह हैं, तो हम शायद उस पृष्ठभूमि के बारे में फिर से सोच रहे हैं।

और जब यीशु मैथ्यू 9 और उस जैसे ग्रंथों में इज़राइल के घर की खोई हुई भेड़ों के बारे में बात करते हैं, तो संभवतः सिद्धांत रूप में कम से कम उस स्थिति का संकेत होता है जिसके बारे में यिर्मयाह और यहेजकेल और अन्य बाइबिल ग्रंथ बात कर रहे हैं, जहां भेड़ें नहीं हैं वास्तव में उन लोगों द्वारा देखभाल की जा रही है जिन्हें उनकी चिंता करने के लिए नियुक्त किया गया है। इसलिए, हमने अध्याय 9 में अपनी आंखों के सामने इस तरह की चीज़ देखी है, जहां हमारे पास यह बेचारी अंधी भेड़ है, और फरीसी किसी वास्तविक सच्चे देहाती होने के बजाय यीशु के साथ अपनी बहस में उसे एक मोहरे के रूप में इस्तेमाल करने के बारे में अधिक चिंतित हैं। उसकी आत्मा की देखभाल करने की परवाह करो. और इसलिए, यह यहाँ अध्याय 10 में फिर से आता है।

तो, मुझे लगता है कि इसकी पृष्ठभूमि बहुत सामान्य है, और यही बात अध्याय 15 में भी सच है, जहां यीशु खुद को सच्ची बेल के रूप में बोलते हैं। जिस कारण से वह वहां सत्य शब्द का उपयोग

करता है, जिस कारण से वह यहां अच्छे शब्द का उपयोग करता है, इसका कारण यह है कि वह वर्तमान नेतृत्व के साथ सूक्ष्मता से अपनी तुलना कर रहा है, जो इसराइल के लोगों की देखभाल करने के तरीके में न तो अच्छा है और न ही प्रामाणिक है। इसलिए, जब हम पाठ में चल रही तुलना के प्रकार पर विचार करते हैं, तो हमारे पास कुछ चीजें हैं जो स्पष्ट हैं जिन्हें यीशु समझाते हैं, और यहां कुछ चीजें हैं जिनका हम शायद अनुमान लगा सकते हैं और उस कल्पना में भर सकते हैं जिसका वह उपयोग कर रहे हैं।

दृष्टांतों में चीजें आमतौर पर इसी तरह काम करती हैं, है न? हमारे पास कुछ लोग हैं जो हमें सिखाते हैं कि दृष्टांत केवल एक मुख्य बिंदु बनाते हैं, और तुलना का केवल एक ही बिंदु होता है जो सिखाए जाने या उपदेश देने योग्य होता है। हमारे पास अन्य लोग भी हैं जो शायद दृष्टांतों के माध्यम से बीज बोते हैं और दृष्टांत में हर चीज को उस वास्तविकता से मेल खाने की कोशिश करते हैं जिसके बारे में वक्ता बात कर रहा है। लेकिन वास्तव में, शायद हमें खुद को याद दिलाने की ज़रूरत है कि दृष्टान्त कहानियाँ हैं, और रूपक कहानियाँ हैं, और वे सभी एक ही काम कर रहे हैं।

वे क्या कर रहे हैं, यह संदर्भ पर निर्भर करता है और इस पर निर्भर करता है कि वक्ता का इरादा क्या है। निश्चित रूप से कुछ आलंकारिक कहानियाँ हैं जिनका उद्देश्य केवल एक बिंदु, कहानी का तथाकथित नैतिक अर्थ बताना है। हमारे पास मैथ्यू 25 में ऐसी बातें हैं जहां यीशु उन दुल्हन सहेलियों के बारे में बात करते हैं जो तैयार नहीं थीं।

और उस कहानी का नैतिक, जैसा कि वे स्वयं कहते हैं, यह है कि आपको किसी भी क्षण दूल्हे से मिलने के लिए तैयार रहना होगा। आप वास्तव में नहीं जानते कि वह कब आ रहा है। ऐसा कोई तरीका नहीं है कि यीशु उस विशेष संदर्भ में दुल्हन की सहेलियों के इस स्टैंड के बारे में कोई विस्तारित चर्चा करें, जो लोग इसके लिए पर्याप्त तेल नहीं लाए थे, तेल इस के लिए खड़ा है, और उसके लिए कुछ स्टैंड खरीदने जाएं।

ऐसा कुछ नहीं है, बस एक मुख्य विचार है। अन्य कहानियाँ जो यीशु सुनाते हैं, जैसे कि बीज बोने वाले का दृष्टान्त, बीज बोने वाले को राज्य के परमेश्वर के वचन के रूप में वर्णित किया गया है, बीज बोया जा रहा है, और जो बीज बोया जा रहा है उसके प्रति चार अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ दी गई हैं। तो, इसकी काफी विस्तृत व्याख्या है।

तो, इन मामलों में, आप एक मुख्य विचार पा सकते हैं, लेकिन आप निश्चित रूप से संबंधित उप-विचार पा सकते हैं जो पूरे दृष्टांत में मुख्य विचारों का समर्थन करते हैं। हम यहां जॉन 10 में लगभग यही कह रहे हैं। इसमें केवल एक मुख्य तुलना नहीं की गई है, तुलना के कई स्तर हैं।

तो, यहाँ यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यीशु अच्छा चरवाहा है। पद 2 में चरवाहे का उल्लेख है, और पद 11 और 14 में यीशु स्वयं को वह चरवाहा बता रहे हैं। भेड़ें, जाहिर तौर पर, इज़राइल हैं और या इज़राइल के भीतर यीशु के शिष्य हैं।

इस तरह के रूपकों के बारे में दिलचस्प बात यह है कि इसमें कई चीजें चल रही हैं। तो, चरवाहा होने के अलावा, यीशु भेड़ों का द्वार भी है। भेड़शाला के बारे में बात की जाती है, वह बाड़ा है जहाँ भेड़ों को लुटेरों से सुरक्षित रखने के लिए विशेष रूप से रात में रखा जाता है।

इसका उल्लेख सांसारिक कहानी में किया गया है। यीशु की व्याख्या में इसका कोई संगत संदर्भ नहीं है। यीशु उसे बाहर नहीं लाते।

तो, हम उसके बारे में क्या कहेंगे? यह काफ़ी स्पष्ट प्रतीत होता है। वह बस इतना कह रहा है कि वह अपनी देखरेख में लोगों को इकट्ठा कर रहा है, और शायद भेड़शाला से उसका मतलब सिर्फ चर्च है, जो लोग उसके सुरक्षात्मक मार्गदर्शन में हैं। वहाँ द्वारपाल है, जो भेड़शाला को उन लोगों के लिए खोल रहा है जो वहाँ रहने के योग्य हैं, और जाहिर तौर पर अन्य लोगों को बाहर रख रहा है जो वहाँ रहने के योग्य नहीं हैं।

जिस तरह से यीशु दृष्टांत के बारे में बात करते हैं उससे यह स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं होता है। उसके अनुरूप कोई इकाई नहीं है। तो, हम कह सकते हैं कि वह बारह है, वह प्रेरित है।

वे वही हैं जो इज़राइल का मार्गदर्शन कर रहे हैं, कम से कम जैसा कि यीशु भविष्य को देखते हैं, और उन्हें उन झूठे लोगों से बचा रहे हैं जो भेड़ प्राप्त करने के लिए बाहर हैं। यीशु चोरों और लुटेरों, साथ ही अजनबियों, साथ ही मजदूरों, और साथ ही भेड़िये के बारे में बात करते हैं। तो, हमारे पास मनुष्य और, पशु साम्राज्य से, भेड़िया दोनों हैं, ऐसे व्यक्ति हैं जो वास्तव में भेड़ की तलाश नहीं कर रहे हैं।

चोर और लुटेरे असली मालिक से भेड़ चुराने का प्रयास कर रहे हैं। अजनबी शायद चोर और डाकू का एक सूक्ष्म संस्करण है, कोई ऐसा व्यक्ति जो आकर भेड़ों को उनके असली मालिकों से दूर चराने की कोशिश करेगा। भाड़े पर लेने वाला वह व्यक्ति होगा जो सिर्फ नौकरी कर रहा है, और भेड़ के प्रति उसकी कोई वास्तविक वफादारी नहीं है, और जैसे ही कोई खतरा उत्पन्न होता है, जैसे कि भेड़िये से, भाड़े का आदमी भाग जाता है और वास्तव में भेड़ के साथ खड़ा नहीं होता है वफादार तरीका।

तो, क्या हमारे पास इसकी कोई वास्तविक व्याख्या है कि यीशु इन संस्थाओं के बारे में क्या सिखा रहे हैं? खैर, मुझे लगता है कि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वह उन सभी को चोर और लुटेरे कह रहे हैं जो उनके सामने आए थे। मुझे लगता है कि यह सब शब्द कुछ हद तक भ्रामक है। मुझे नहीं लगता कि यीशु इज़राइल के इतिहास में सभी को एक साथ लाने का इरादा रखते हैं, लेकिन वह निश्चित रूप से कह रहे हैं कि कई लोग वास्तव में उस प्रकार के देहाती नेता नहीं हैं जिनकी इज़राइल को आवश्यकता है।

अजनबी, किराये पर रहने वाले व्यक्ति और भेड़िये के लिए विशेष रूप से कोई वास्तविक पत्राचार नहीं बताया गया है। हम यीशु होने का दावा करने वाले झूठे शिक्षकों के रूप में ऐसी संस्थाओं की आपूर्ति कर सकते हैं। हम सीखते हैं कि झूठे मसीहा होंगे, जो लोग यीशु के सच्चे अनुयायी होने का दावा करते हैं लेकिन नहीं।

शायद भाड़े पर लेना, फिर से, इज़राइल के नेतृत्व में उन लोगों के लिए एक संदर्भ होगा जो इसमें केवल इसलिए हैं कि वे इससे क्या प्राप्त कर सकते हैं, अपनी स्थिति के लिए, भेड़ों के कल्याण के लिए नहीं। आप भेड़िये को शैतान समझने से खुद को रोक नहीं सकते, क्या आप ऐसा सोच सकते हैं? उस तरह का काम करता है. तो शायद इससे भी मदद मिलेगी.

ऐसा नहीं है कि जॉन का सुसमाचार शैतान और परमेश्वर के लोगों के विश्वास को बर्बाद करने की उसकी इच्छा के संकेत के बिना है। श्लोक 16 में भेड़शाला की अन्य भेड़ों का संदर्भ काफी दिलचस्प है। मैं मदद नहीं कर सकता, लेकिन सोचता हूँ कि यीशु उस महिला जैसे लोगों के बारे में बात कर रहे थे जिनसे वह सामरिया के सूखार में कुएं पर मिले थे, जॉन अध्याय 4, और पुस्तक में अन्य लोग जो जरूरी नहीं कि स्वभाव से यहूदी हों, लेकिन जिस तरह से वे यहूदी हैं। इज़राइल के ईश्वर में रुचि।

और इसलिए, यीशु अन्य भेड़ों को बाड़े में लाना चाहता है और वह चाहता है कि वे भी उसी बाड़े का हिस्सा बनें ताकि केवल एक ही बाड़ा और एक चरवाहा हो। और यह कई मायनों में मुझे लगता है कि अन्य ग्रंथों में भगवान के लोगों के बाइबिल धर्मशास्त्र के अनुरूप है। तो, यह विस्तारित सादृश्य जो खींचा जा रहा है वह बहुत स्पष्ट और बहुत दिलचस्प है और मुझे लगता है कि इसके बारे में इस तरह से सोचने पर बहुत शिक्षाप्रद है।

एग्रेस डे नामक एक बहुत ही विशिष्ट वेबसाइट है जो आध्यात्मिक मुद्दे बनाने के लिए भेड़ों का उपयोग करती है और इस वेबसाइट पर विशेष रूप से जॉन के सुसमाचार को दर्शाने वाले कुछ दिलचस्प कार्टून हैं। तो, यीशु द्वारा यहां बनाए गए संगति के पैरोडिया के व्याख्याशास्त्र पर इस कार्टून द्वारा विचार-विमर्श किया जा रहा है। यह एक कार्टून है लेकिन यहां चित्र की व्याख्या के बारे में एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर बात हो रही है।

तो एक भेड़ दूसरी भेड़ से कहती है, यीशु चरवाहा है या द्वारपाल? जाहिर है, यीशु कहते हैं कि वह इसमें दोनों हैं। तो, यहां अधिक शिक्षित भेड़ें, जाहिर तौर पर यह मदरसा प्रोफेसर हैं, कहते हैं कि यहां कई रूपक हैं, जो कि प्रोफेसरों द्वारा छात्रों को रास्ते से हटाने के लिए कही जाने वाली बात है ताकि उन्हें वास्तव में एहसास न हो कि प्रोफेसर के पास नहीं है उत्तर। शायद यही चल रहा है.

तो पहली भेड़ फिर कहती है, अच्छा बाकी भेड़ें कौन हैं? और वह आदमी कहता है, ठीक है, वह आप ही हैं। और वह कहता है, यह मैं हूँ? तो, हम एग्रेस डे से इस दृष्टांत के साथ एक और धार्मिक बिंदु से संबंधित कुछ और चर्चा करेंगे, लेकिन ऐसा लगता है कि यह अभी इस एहसास पर आया है कि दृष्टांत सीधे उसके बारे में बात कर रहा था। तो, हमारे विचार के लिए यहां कुछ विवरणों पर चलते हैं।

ये अन्य भेड़ें कौन हैं? हमने इसके बारे में अभी संक्षेप में बताया है लेकिन जाहिर तौर पर यह एक सूचना है। यह एक संकेत है कि ईश्वर को उन लोगों में रुचि है जो अपनी जातीयता से यहूदी नहीं हैं। वह निश्चित रूप से उनमें रुचि रखते हैं, लेकिन शायद उत्पत्ति अध्याय 12 के इब्राहीम पैटर्न में, यीशु यहूदी लोगों को इस वास्तविकता के प्रति सचेत करने की कोशिश कर रहे हैं कि भगवान

का मूल उद्देश्य इब्राहीम के बीज के साथ विशेष होना नहीं है, बल्कि इब्राहीम के बीज का उपयोग करना है। पृथ्वी के सभी देशों तक पहुँचने और उन्हें आशीर्वाद देने की उनकी मिशनरी एजेंसी के रूप में।

तो, हमारे पास अध्याय 4 में सामरिया की स्त्री है। हमारे पास अध्याय 11 में भी संकेत हैं और अध्याय 12 में भी हमसे पहले हैं जहां मुझे लगता है कि भगवान के इस हित के कुछ संकेत होंगे। यह जॉन का एक और पाठ है जहां यीशु खुद को पिता के एजेंट के रूप में बोलते हैं। तो, आपने अध्याय 10 और श्लोक 12 जैसे ग्रंथों में देखा है, किराये पर लिया गया व्यक्ति चरवाहा नहीं है और वह भेड़ का मालिक नहीं है।

इसलिए, जब वह भेड़िये को आते देखता है, तो भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है। तभी भेड़िया झुंड पर हमला करता है और उसे तितर-बितर कर देता है। वह आदमी भाग जाता है क्योंकि वह मज़दूर है, और उसे भेड़ों की कोई परवाह नहीं है।

तो, पद 15 में यीशु अपने बारे में एक विरोधाभासी तरीके से बात कर रहे हैं, जैसे पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूँ, मैं भेड़ों के लिए अपना जीवन देता हूँ। इसलिए, किराये पर लिए गए उस व्यक्ति के विपरीत जिसकी उसे किराये पर देने वाले व्यक्ति के प्रति कोई वास्तविक जिम्मेदारी नहीं है, यीशु उस व्यक्ति के प्रति वफादार है जिसने उसे किराये पर दिया है, वह पिता है जिसने उसे दुनिया में भेजा है, और वह जा रहा है भेड़ों के जीवन की देखभाल के लिए जो भी आवश्यक हो वह करना। हम हनुक्का में दूसरे भाग में प्रवचन में आगे देखते हैं कि यीशु खुद को पिता के पुत्र के रूप में बोलते हैं।

मेरा पिता, जिसने मुझे भेड़ें दी, पद 29, सब से बड़ा है। उन्हें मेरे पिता के हाथ से कोई छीन नहीं सकता। और यहाँ किकर है, मैं और मेरे पिता एक हैं।

मैं और मेरे पिता एक हैं। तो यह फिर से पुष्टि करता है कि यीशु का पिता के साथ एक अनोखा रिश्ता है। यूहन्ना अध्याय 5 की ओर लौटते हुए और यरूशलेम में धार्मिक नेताओं के साथ यीशु का पहला विवाद, आपको याद होगा, यीशु के यह कहने पर था, मेरे पिता अब तक काम करते हैं और मैं काम करता हूँ।

और इसलिए, यीशु और पिता का घनिष्ठ, करीबी, अनोखा रिश्ता वहाँ एक समस्या थी, और यह अभी भी यहाँ एक समस्या है। इस परिच्छेद का एक और दिलचस्प धार्मिक बिंदु वह तरीका है जिसमें यीशु भेड़ों की सुरक्षा के बारे में बात करते हैं। ईसाईजगत में इसके बारे में हमारे बीच काफी धार्मिक विवाद है।

हम संतों की दृढ़ता और शाश्वत सुरक्षा जैसे सिद्धांतों की बात करते हैं। मुझे लगता है कि यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि इस परिच्छेद में, यीशु न केवल यह कहते हैं कि कोई भी भेड़ को पिता के हाथ से नहीं छीन सकता है, जो कैल्विनवादियों को शाश्वत सुरक्षा के अपने सिद्धांत से खुश रखता है, बल्कि यीशु भेड़ की आवश्यकता के बारे में भी बोलते हैं। गुरु की आवाज का अनुसरण करना। वास्तव में, यीशु कहते हैं कि भेड़ किसी अजनबी के पीछे नहीं चलेगी।

वे गुरु की आवाज को जानते हैं और वे उस आवाज, किसी अन्य आवाज को नहीं सुनते हैं। मेरा मानना है कि इससे आर्मिनियाई लोग भी खुश रहेंगे, कि जब तक आपके पास दृढ़ता नहीं होगी तब तक आपको सुरक्षा नहीं मिलेगी। इसलिए इस अध्याय में यहां इस्तेमाल की गई कल्पना पॉप धर्मशास्त्र में इस बहस के दोनों पक्षों को आराम और पीड़ा देने के लिए पर्याप्त है।

भेड़ें वास्तव में पिता के हाथ में हैं और कोई भी उन्हें छीन नहीं सकता है, लेकिन भेड़ें जानबूझकर विश्वास में अपनी दृढ़ता के द्वारा, झुंड के चरवाहे का अनुसरण करते हुए खुद को पिता के हाथों में सौंप रही हैं। इस पर और अधिक जानकारी के साथ हम निष्कर्ष निकालेंगे, लेकिन पहले हमारे पास बात करने के लिए कुछ अन्य चीजें हैं। तो यहाँ जॉन का एक और पाठ है जो यीशु को दिव्य रूप में बहुत ऊंचे स्तर पर बताता है।

दरअसल, इस अनुच्छेद में यीशु के यह कहने के बाद कि मैं पिता हूँ, एक हूँ, वे कहते हैं, हम तुम्हें अच्छे काम करने के लिए नहीं, बल्कि ईशनिंदा के लिए पत्थर मार रहे हैं, क्योंकि तुम एक मात्र मनुष्य होकर भगवान होने का दावा कर रहे हो। इसलिए, उन्होंने पिता के साथ अपनी एकता के बारे में यीशु की चर्चा को समझा और जिस तरह से उन्होंने और पिता ने भेड़ों को संरक्षित करने के लिए मिलकर काम किया। उन्होंने इस सिद्धांत को समझ लिया है कि किसी का एजेंट होना उस व्यक्ति का समान प्राधिकारी होना है।

तो, वे सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए कह रहे हैं, आप कह रहे हैं कि आप भगवान हैं और उन्हें यह पसंद नहीं आया और वे उसे एक बार फिर से पत्थर मारने के लिए तैयार थे, पहली बार नहीं। यह भजन 82 से दिलचस्प चर्चा की ओर ले जाता है और हम यहां बस एक क्षण में इसके बारे में बात करेंगे। इसलिए, इस अध्याय में पुराने नियम के कई संकेत हैं।

हम पहले ही इस तथ्य का उल्लेख कर चुके हैं कि इसमें झुंड की छवि है। यिर्मयाह 23, यहेजकेल 34 जैसे पाठ। अध्याय 10 और श्लोक 16 में थोड़ा और अधिक विशिष्ट होना, जहां यीशु ने कहा, मेरे पास अन्य भेड़ें हैं जो इस भेड़ की नहीं हैं और मुझे उन्हें भी लाना होगा, शायद विशेष रूप से यहेजकेल 34 और में ग्रंथों की ओर इशारा करते हुए यहेजकेल 37.

हमारे पास 10:22 में हनुक्का का संदर्भ है, जो निश्चित रूप से हिब्रू बाइबिल में नहीं पाया जाता है, लेकिन 1 मैकाबीज़ और 2 मैकाबीज़ में अपोक्रीफल सामग्री में पाया जाता है। और इसके बारे में तल्मूड, बेबीलोनियाई तल्मूड में कुछ चर्चा है, यहां ट्रेक्टेट शब्बत 21बी में बी का मतलब यही है। यदि आप इस पर गौर करना चाहते हैं, तो आप यह सारी जानकारी अब ऑनलाइन पा सकते हैं।

यह आश्चर्यजनक है कि आप वहां पढ़ने के लिए कितनी सारी चीजें खुली हुई पा सकते हैं। लेकिन संभवतः इस अध्याय में बाइबिल, तनाख, टोरा, नेवी'इम और केतुविम का सबसे दिलचस्प और कुछ मायनों में हैरान करने वाला उपयोग वह तरीका है जिसमें यीशु ने अध्याय 10 श्लोक 34 में भजन 82 को संदर्भित किया है। जब यीशु यह कहने के लिए कि मैं और मेरे पिता एक हैं, पथराव किया जाने वाला है, उनका दावा है कि वह ईशनिंदा कर रहा है।

तो वह उनको पद 34 में उत्तर देता है, क्या यह तेरी व्यवस्था में नहीं लिखा है, कि मैं ने कहा, कि तू परमेश्वर है। तो, यह हमें भजन 82 पर वापस ले जाता है, जो एक छोटा भजन है जिसमें बहुत कुछ आगे और पीछे है। भजन की शुरुआत ईश्वर को एक बड़ी सभा की अध्यक्षता करने और देवताओं के बीच, एलोहीम के बीच न्याय सुनाने के रूप में वर्णित करने से होती है।

शायद यह उन दिव्य प्राणियों का संदर्भ है जो स्वर्गीय सिंहासन कक्ष में भगवान के सामने इकट्ठा होते हैं और भगवान उनके कार्यों का निर्णय कर रहे हैं और उन्हें उनके संबंधित कार्य दे रहे हैं। तब भजन स्पष्ट रूप से उससे थोड़ा अलग हो जाता है, जब तक कि यहां जिन देवताओं की बात की जा रही है वे शायद मनुष्य नहीं हैं, शायद नागरिक अधिकारियों के रूप में लोग या शायद इज़राइल पर न्यायाधीश भी नहीं हैं। और यदि ऐसा है, तो देवताओं के बीच निर्णय देना स्वर्गीय परिषद के बीच नहीं, बल्कि सांसारिक नेताओं के बीच निर्णय देना होगा, जिन्हें भगवान ने इसराइल पर शासन करने का अधिकार दिया है।

तो, इस व्याख्या के तहत इन तथाकथित देवताओं, इज़राइल के इन न्यायाधीशों द्वारा किए गए अन्याय को यहां माफ किया गया है। तू कब तक अन्यायियों की रक्षा, और दुष्टों का पक्ष करता रहेगा? इसके बजाय, श्लोक तीन में, कमजोरों और अनार्थों की रक्षा करें, गरीबों और उत्पीड़ितों का समर्थन करें, और कमजोरों और जरूरतमंदों को बचाएं। पद पाँच में इन या तो देवदूत प्राणियों या मानव नेताओं, मानव न्यायाधीशों को बेकार होने की बात कही जाएगी।

ये देवता कुछ नहीं जानते। उन्हें कुछ भी समझ नहीं आता. वे अंधेरे में चलते हैं।

पृथ्वी की सारी नींव हिल गयी है। श्लोक छह वह पाठ है जिसका उल्लेख यीशु विशेष रूप से जॉन 10, श्लोक 34 में कर रहे हैं। मैंने कहा, आप देवता हैं, आप सभी परमप्रधान के पुत्र हैं।

लेकिन ये कोई अच्छी बात नहीं है. समस्या यह है कि उनके व्यवहार और ईश्वर के प्रति उनकी निष्ठा की कमी के कारण, श्लोक सात, आप मनुष्यों की तरह मर जायेंगे। हर दूसरे शासक की तरह आप भी गिर जायेंगे।

भजन इस कहावत के साथ समाप्त होता है, उठो, हे भगवान, पृथ्वी का न्याय करो, क्योंकि सभी राष्ट्र तुम्हारी विरासत हैं। यहाँ एक व्यापक लौकिक चीज़ है, जो केवल इज़राइल से संबंधित नहीं है, बल्कि केवल इज़राइल के लिए ही नहीं, बल्कि सभी राष्ट्रों के लिए ईश्वर के न्याय के बारे में चिंता का विषय है। तो संतुलन पर, भजन 82 ईश्वर के प्रति निष्ठा की कमी के बारे में बात कर रहा है, या तो देवदूत प्राणियों की या शायद अधिक संभावना वाले मनुष्यों की जिन्हें उसने अपना दिव्य अधिकार सौंपा है।

क्योंकि उनके पास दैवीय अधिकार है, वे भगवान के रूप में कार्य कर रहे हैं और कुछ अर्थों में उन्हें छोटे देवता कहा जा सकता है। तो, फिर यीशु ने इस भजन की ओर इशारा किया, जिसकी अपनी व्याख्यात्मक कठिनाइयाँ हैं, एक बहुत दिलचस्प बात है। मैं ने कहा, क्या तेरी व्यवस्था में यह नहीं लिखा, कि तुम परमेश्वर हो? 1035, यहाँ यीशु का तर्क है।

यदि उसने उन्हें देवता कहा जिनके पास परमेश्वर का वचन आया। तो, यह एक यदि-तब प्रकार का न्यायवाक्य है। यदि उसने उन्हें देवता कहा जिनके पास परमेश्वर का वचन आया।

दूसरे शब्दों में, भजन 82 में जिन संस्थाओं के बारे में बात की गई है उन्हें देवता कहा जाता है क्योंकि उन्हें काम सौंपा गया था, उन्हें कुछ प्रकार के मध्यस्थों के रूप में ईश्वर के वचन को लागू करने, लोगों को ईश्वर के वचन का पालन करने के लिए प्रेरित करने, ईश्वर के वचन का उपयोग करने का अधिकार सौंपा गया था। संसार में न्याय की प्राप्ति हेतु ईश्वर। यदि उसने उन्हें देवता कहा जिनके पास परमेश्वर का वचन आया, तो यह प्रमुख आधार है। एक छोटा सा आधार, धर्मग्रंथ को तोड़ा नहीं जा सकता।

बाइबिल आधिकारिक है। बाइबिल में ऐसा कोई पाठ नहीं है, जिसे आप अमान्य कर सकें। यीशु ने कहा, बाइबिल यही कहती है, और हम बाइबिल के अधिकार को स्वीकार करते हैं।

तो, फिर निष्कर्ष यह है। उसके बारे में क्या, जिसे पिता ने अपना बना कर अलग कर दिया और दुनिया में भेज दिया? इसे ही शास्त्रीय रूप से औपचारिक तर्क में छोटे से बड़े तक का तर्क कहा जाएगा। इनमें से कुछ चीजों के लिए वे लैटिन का उपयोग करते हैं।

तो, यह एक तर्क होगा कि रब्बी साहित्य इस प्रकार की चीजों से भरा हुआ है। और यह नए नियम में अन्यत्र भी पाया जाता है, विशेषकर पॉल में। आप या तो छोटे से बड़े या बड़े से छोटे की ओर बहस कर सकते हैं और दोनों के बीच एक सादृश्य बनाकर एक बिंदु बना सकते हैं।

रब्बियों ने इसे हल्का और भारी कहा। तो, यीशु बहस कर रहे हैं, मुझे लगता है कि हम एक हल्की स्थिति कह सकते हैं। यदि उसने उन्हें देवता कहा, जिनके पास परमेश्वर का वचन आया, तो इससे भी बड़ी स्थिति में, तुम मुझ पर क्रोधित कैसे हो सकते हो? आप क्रोधित कैसे हो सकते हैं? ये पत्थर तुम्हारे हाथ में क्यों हैं? मैंने बस इतना कहा कि मैं पिता का बेटा हूँ।'

तो, मैं वही हूँ जिसे पिता ने पवित्र करके जगत में स्थापित किया। आप मुझ पर ईशानिंदा का आरोप क्यों लगाते हैं? क्योंकि मैं ने कहा, मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ। मैं ने यह नहीं कहा, कि मैं परमेश्वर हूँ, एलोहीम।

मैंने कहा मैं भगवान का बेटा हूँ। तो, वह कह रहे हैं कि आपको उस धर्मग्रंथ से कोई समस्या नहीं है जिसमें मनुष्य दैवीय अधिकार रखते हैं और भगवान कहते हैं कि कुछ अर्थों में, वे भगवान के रूप में कार्य कर रहे हैं। वे क्रियात्मक रूप से भगवान हैं।

वे देवता हैं। आपको इससे कोई दिक्कत नहीं है। आपको मेरे यह कहने से दिक्कत है कि मैं ईश्वर का पुत्र हूँ और ईश्वर का काम कर रहा हूँ।

इसलिए, वह अनिवार्य रूप से कहता है, यदि मैं ये काम करता हूँ, तो भले ही आप मुझ पर विश्वास न करें, कि मैं पिता का पुत्र हूँ, कार्यों पर विश्वास करें, ताकि आप जान सकें और समझ सकें कि पिता मुझ में है और मैं उसमें हूँ पिता। निःसंदेह, सबसे हालिया कार्य जिसका वह उल्लेख कर रहे होंगे वह अध्याय नौ में अंधे व्यक्ति को ठीक करने का कार्य होगा। लेकिन जैसा कि

अध्याय नौ में कहानी का नैतिक इसे एक विडंबनापूर्ण तरीके से बताता है, फरीसी जो सोचते हैं कि वे देखते हैं, जो सोचते हैं कि उनके पास दिव्य अंतर्दृष्टि है, जो वे हैं जिनके लिए भगवान का वचन भजन 82 की भाषा में आया था, वही वे लोग जो प्राधिकारी हैं, जिनसे अपेक्षा की जाती है कि वे पृथ्वी पर ईश्वर के अधिकार की मध्यस्थता करें और न्याय और धार्मिकता प्राप्त करें।

ये वे लोग हैं जो यीशु के साथ बहुत अन्यायी और अधर्मी व्यवहार कर रहे हैं। इसलिए फिर से, उन्होंने चरित्र को ध्यान में रखते हुए, उसे पकड़ने की कोशिश की, हम अध्याय आठ और अध्याय नौ के अंत में इससे परिचित हैं, और यहां फिर से अध्याय 10 के अंत में। यहां एक विषय को पकड़ रहे हैं।

उन्होंने उसे फिर पकड़ना चाहा, परन्तु वह पकड़ से छूट गया। तब यीशु यरदन के पार उस स्थान पर लौट गया जहां यूहन्ना बपतिस्मा देता था। इसलिए जैसे ही अध्याय समाप्त होता है, यीशु यरूशलेम से थोड़ा विश्राम लेते हैं, थोड़ी राहत लेते हैं, वहां होने वाली सारी गर्मी और तनाव से दूर होते हैं।

और वह जॉर्डन के पार कुछ समय बिताता है। तो, जॉन 10 का अध्याय मूलतः उसी प्रकार का अध्याय है जिसे हम अध्याय सात के बाद से देख रहे हैं। इसलिए, यदि आप इन सभी वीडियो को, एक के बाद एक, सुन रहे हैं, तो आपको कठिनाइयों, तनाव और संघर्ष की भारी खुराक का सामना करना पड़ेगा जो यीशु का धार्मिक नेता के साथ हुआ था।

यदि आपने इन सभी बातों को एक साथ सुना है तो आपको सजा मिल सकती है क्योंकि यह बहुत दुखद सामग्री है क्योंकि यीशु भगवान के शहर, यरूशलेम में आते हैं, और भगवान का मसीहा बनने की कोशिश करते हैं और नेताओं द्वारा उनका स्वागत नहीं किया जाता है। भगवान के लोग. तो शायद भजन 82 इस बात के लिए उपयुक्त निष्कर्ष है कि यीशु के साथ कैसा व्यवहार किया गया है। मूल रूप से भजन में जो अन्याय किया गया था, वह संभवतः जॉन 7-10 में उसी प्रकार के नेताओं द्वारा यीशु पर किया जा रहा है।

जैसे ही हम निष्कर्ष निकालते हैं, हम थोड़े से धार्मिक चिंतन के लिए एग्रेस देई के पास वापस आते हैं। तो, हमारे यहां भेड़चाल जैसा संवाद चल रहा है। क्या आप जानते हैं कि एक अच्छा चरवाहा होने का सबसे अच्छा हिस्सा क्या है? प्रोफेसनल भेड़ यहाँ स्तब्ध है और कहती है, मैं कल्पना नहीं कर सकता।

और प्रतीत होता है कि साधारण भेड़ में बड़ी अंतर्दृष्टि होती है और वह भेड़ होने के नाते कहती है। तो, यीशु को हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में रखने के बारे में सबसे बड़ी बात क्या है? खैर, बचाया जा रहा है और उसके आधिपत्य में रहा जा रहा है। उसी साइट से एक और कार्टून, मुझे लगता है कि यहां बाईं भेड़ दाईं ओर प्रोफेसर के साथ खेल रही है।

अरे, मुझे पता चला है कि मुझे अब चर्च जाने की ज़रूरत नहीं है। हुंह? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं क्या करता हूं. यीशु ने कहा कि कोई भी मुझे उसके हाथ से नहीं छीन सकता।

प्रोफेसर इसके लिए तैयार हैं। वह कहता है, हाँ, लेकिन मुझे ऐसा लगता है जैसे आप बाहर कूदने के लिए तैयार हो रहे हैं। तो, आज हमारे पास एक इंजीलवादी ईसाई है, जो इस बात पर जोर देते हैं कि अच्छे चरवाहे के रूप में यीशु का होना कितना अद्भुत है।

इसे हम सुरक्षा कहेंगे। आज हमारे पास इंजील ईसाईजगत में भी ऐसे लोग हैं जो इस आवश्यकता के बारे में बहुत कुछ बोलते हैं कि हमें यह सुनिश्चित करना है कि हम यीशु के साथ वहाँ रहें। इसलिए, मुझे लगता है कि हमारे यहां एक तरह का मज़ाक है, कैल्विनवादियों और अर्मेनियाई लोगों दोनों पर, जो मानवीय जिम्मेदारी पर जोर देना चाहते हैं और जो दैवीय संप्रभुता और भगवान के पास आए विश्वासियों की सुरक्षा पर जोर देना चाहते हैं। मसीह।

बेशक, इस सब में बुद्धिमत्ता का बेहतर हिस्सा, आप शायद देख रहे हैं कि मुझे क्या मिल रहा है, यह महसूस करना है कि यह निश्चित रूप से एक अद्भुत आशीर्वाद है, अद्भुत अनुग्रह का काम है। और जो अनुग्रह अद्भुत नहीं है वह वास्तव में अनुग्रह नहीं है, क्या ऐसा है? ईश्वर की अद्भुत कृपा से, यीशु हमारा अच्छा चरवाहा बन गया है। और भेड़ के रूप में जिसे उसके झुंड में प्रवेश मिल गया है, हम कभी बाहर क्यों निकलना चाहेंगे? हम क्यों नहीं चाहेंगे, जैसा कि यूहन्ना 10 इसे बार-बार कहता है, उस प्रकार की भेड़ें बनना जो उसकी आवाज़ सुनती हैं और किसी अजनबी की आवाज़ नहीं सुनती हैं और उस प्रकार की भेड़ें जो उसका बहुत, बहुत करीब से अनुसरण करती हैं?

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 12 है, टेन्स टाइम्स इन जेरूसलम, द गुड शेफर्ड, जॉन 10:1-42।